ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 6.4

Vol. 11 Issue 6 December 2025

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 6.4)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

प्रेमचन्द का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श

गिरवर सिंह शेखावत
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर
डॉ0 निशा साहनी
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

::

शोध सारांश

मुंशी प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय समस्याओं का सशक्त दस्तावेज है। यह शोधपत्र प्रेमचंद के साहित्य में निहित सामाजिक चेतना, विशेष रूप से छुआछूत, जातिवाद, धार्मिक पाखंड और सामाजिक अन्याय के चित्रण का विश्लेषण करता है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में दलितों, स्त्रियों और वंचित वर्गों की पीड़ा को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया तथा सामाजिक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन, मानवीय मूल्यों और समानता की भावना को साहित्यिक रूप प्रदान किया। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि प्रेमचंद का साहित्य समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना का प्रभावी माध्यम है। निष्कर्षतः, प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

प्रमुख शब्द

मुंशी प्रेमचंद, सामाजिक चेतना, छुआछूत, कर्मभूमि, हिंदी साहित्य

::

प्रेमचन्द का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श

गिरवर सिंह शेखावत
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर
डॉ0 निशा साहनी
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

:::

प्रस्तावित शोध की भूमिका

प्रेमचन्द ने अपने सम्पूर्ण लेखन में सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं पर बहुत ही गहनविमर्श प्रस्तुत किया है, जो इतने रोचक एवं रसप्रद हो गए हैं कि पाठकों की आँखे खोलते हैं और उन्हें सोचने समझने को मजबूर करते हैं। भारतीय सामाजिक समस्याओं एवं विसंगतियों के चित्रण ने ही प्रेमचन्द के साहित्य को इतना अधिक लोकप्रिय एवं प्रामाणिक बना दिया है।

प्रेमचन्द के लेखन के प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज द्वारा समाजसुधार का आन्दोलन जोर–शोर से चल रहा था। कुछ वर्षों बाद महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति के मंच पर उपस्थित हुए। उन्होंने बड़े विस्तृत पैमाने पर व्यक्ति को उत्पीड़ित करने वाली सामाजिक–धार्मिक रूढ़ियों के विरूद्ध तथा देश को पद–दलित करने वाले विदेशी शासन के विरूद्ध जबरदस्त आन्दोलन आरम्भ किया। प्रेमचन्द के साहित्य ने इसमें अपूर्व सहयोग दिया। वे कलम के धनी थे। इसीलिए उन्होंने नारी वर्ग की विभिन्न समस्याओं को, धर्म, जाति, भेद–भाव, सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वास आदि को अपने साहित्य में स्थान दिया।

प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में सामाजिकता को इतना अधिक महत्त्व इसलिए दिया क्योंकि वे साहित्य को समाज का एक विशेष लक्षण मानते थे तथा समाज–सुधार युग की माँग है, इस बात का अच्छी तरह अनुभव करते थे। देश की संस्कृति की रक्षा तथा अभ्युत्थान के लिए सैकड़ों सुधारक अपने समय और शक्ति का दुरुपयोग कर रहे थे। पश्चिमी संस्कृति के आने के कारण विचारशील शिक्षित

समुदाय को समाज का दूषण, अंधविश्वास और रूढ़ नीतियाँ खलने लगी थीं। इन सब कुरीतियों को दूर करना, अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम बनाये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक था, क्योंकि संस्कृति ही देश का प्राण है। डॉ नगेन्द्र ठीक कहते हैं– "गाँधी युग के प्रथम तीन चरणों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और साम्प्रदायिक जीवन के सभी सामाजिक समस्याओं का जितना सटीक चित्रण प्रेमचन्द्र में मिलता है इतना अन्यत्र कहीं मिलेगा, इसमें संदेह है।"

"वास्तव में जिस समय उत्तर भारत के इतिहास में इस काल खण्ड का सांस्कृतिक अतीत लिखा जायेगा, उस समय प्रेमचन्द के साहित्य से अधिक व्यवस्थित सामग्री अन्यत्र नहीं मिलेगी।" प्रस्तुत अध्याय में प्रेमचन्द के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श पर विचार किया गया है।

प्रेमचन्द ने साहित्य में ब्राह्मणवाद, छुआ–छूत, अंधविश्वास आदि पर विचार व्यक्त किया है जो इस प्रकार है– कर्मभूमि उपन्यास में ब्राह्मणवाद या अछूत–समस्या का दूसरा पहलू मंदिर प्रवेश का है जो एक सीमा तक उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा से सम्बद्ध है। मन्दिर प्रवेश का प्रश्न उपन्यास में आन्दोलन का रूप ले लेता है। एक महीने से ठाकुर द्वारे में पं० मधुसूदन जी की कथा हो रही है इसी बीच एक दिन हंगामा हो जाता है, कथा बन्द हो जाती है। यह हंगामा मंदिर में अछूतों के प्रवेश को लेकर हुआ। प्रेमचंद ने धर्महवसियों की वास्तविकता का विस्तार से चित्रण किया है– "ब्रह्मचारी लोग भगवान् की कथा सुनने आते हैं कि अपना धर्म भ्रष्ट करने आते हैं? भंगी, चमार जिसे देखो घुसा चला आया है। ठाकुर जी का मन्दिर न हुआ सराय हुई। धर्म पर इससे बड़ा आघात क्या हो सकता है? धर्मात्माओं के क्रोध का पारावार न रहा।"

छुआ–छूत हिन्दू समाज की एक भयंकर बीमारी है। धार्मिक अन्धविश्वासों द्वारा पोषित छुआ–छूत की भावनाएँ हिन्दू समाज के अधिकांश जनों में व्याप्त हैं। प्रेमचन्द ब्राह्मणवाद, और छुआ–छूत के विरूद्ध थे। प्रेमचन्द ने हिन्दू समाज मे पाये जाने वाले इस अमानवीय भाव को दूर करने और अछूत वर्ग के स्वाभिमान को जाग्रत करने का भरंसक प्रयास किया है। उन्होंने अछूतों पर अपनी विभिन्न रचनाओं में विस्तार से लिखा तथा उनकी वास्तविक समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

हिन्दुओं ने अपने मन्दिरों में अछूतों का प्रवेश निषिद्ध कर रखा था। अनेक समाज–सुधारक अछूतों को मंदिर प्रवेश करा देने में ही अछूतों की समस्या का समाधान समझ बैठे थे। मात्र इसीलिए आखें बन्द करके उसके गुण–गान करना प्रेमचन्द की नीति नहीं थी।

'कर्मभूमि' में दूसरे भाग से चमारों के जीवन की कहानी प्रारम्भ होती है, जब अमर एक परदेशी के रूप में एक पहाड़ी गाँव में पहुँचता है जहाँ रैदास रहते हैं। सर्वप्रथम यहाँ एक बुढ़िया से उसका साक्षात्कार होता है। अमर जाति–पाति के सम्बन्ध में प्रारम्भ में ही घोषणा करता है– "मै जाँत–पात नहीं

मानता, माता जी, जो सच्चा है, वह चमार भी हो, तो आदर के योग्य है, जो दगाबाज, झूठा, लम्पट हो, वह वह ब्राह्मण भी हो तो आदर के योग्य नहीं।" प्रेमचन्द की यही स्पष्ट मान्यता थी।

अछूतों की आर्थिक स्थिति कितनी भयावह है उसका चित्र बुढ़िया रैदास की झोपड़ी है। अमर झोपड़ी में गया, "तो उसका हृदय काँप उठा। मानों दरिद्रता छाती पीट–पीटकर रो रही है और हमारा उन्नत समाज विलास में मग्न है। उसे रहने को बंगला चाहिए, सवारी को मोटर। इस संसार का विध्वंस क्यों नहीं हो जाता?"

चमारों की सामाजिक स्थिति का चित्रण प्रेमचन्द बालकों के मुख से करवाते हैं। अमर चमार बालकों से पूछता है, "कहाँ पढ़ने जाते हो? बालक ने नीचे का ओठ सिकोड़कर कहा–कहाँ जाँय, हमें कौन पढ़ाये ? मदरसे में कोई जाने तो देता नहीं। एक दिन दादा हम लोगों को लेकर गये थे। पंडित जी ने नाम लिख लिया, पर हमें सबसे अलग बैठाये थे। सब लड़के हमें 'चमार–चमार' कहकर चिढ़ाते थे। दादा जी ने नाम कटा दिया।" प्रेमचन्द की मान्यता थी कि जब तक शिक्षा का प्रसार नहीं होता तब तक समाज के स्तर को उठाया नहीं जा सकता।

'कर्मभूमि' में जब दूसरे दिन कथा शुरू होती है तो अछूत वर्ग उसमें भाग नहीं लेता है। मंदिर में हो रही कथा का वर्णन प्रेमचन्द करते हैं, "श्रोताओं की संख्या बड़ी कम हो गयी थी। मधुसूदन जी ने चाहा कि रंग जमा दें, पर सब लोग सो रहे थे। मालूम पड़ रहा था कि मन्दिर का आँगन कुछ छोटा हो गया है, दरवाजे कुछ नीचे हो गये हैं।" यह दशा उन धर्मवीरों की है जो मंदिर में अछूतों को देखकर हिंसक हो उठे थे, जो धर्म पर अपना एकाधिकार समझते हैं। दूसरी और नौजवान सभा में शान्तिकुमार की कथा हो रही थी। थोड़ी देर में दरियाँ छोटी पड़ गई और कुछ देर बाद मैदान भी छोटा पड़ गया। अधिकांश लोग चिथड़े पहने हुए थे। उनके शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी। स्त्रियाँ आभूषणहीन, मैली–कुचौली धोतियाँ पहने हुई थी पर हृदयों में दया थी, धर्म एवं सेवा भाव था, त्याग था। वही वास्तविक धर्म था, किसी में छुआ–छूत व घृणा का नाम न था। प्रेमचन्द ने धार्मिक पाखण्डों को खोलकर रख दिया है।

अगले दिन फिर कथा होती है। डॉ० शान्तिकुमार का प्रवचन चल रहा है, "क्या तुम ईश्वर के घर से गुलामी का बीड़ा लेकर आये हो? तुम दूसरों की सेवा करते हो पर तुम गुलाम हो, तुम्हारा समाज में कोई स्थान नहीं, तुम समाज की बुनियाद हो, तुम्हारे ऊपर समाज खड़ा है, पर तुम अछूत हो। तुम मन्दिरों में नहीं जा सकते हो।

प्रस्तावित शोध के सोपान

मन्दिर किसी एक आदमी की चीज नहीं है। वह हिन्दू मात्र की चीज है। यदि तुम्हें कोई रोकता है तो उसकी जबरदस्ती है। मत डरो उस मन्दिर के द्वार से चाहे तुम्हारे ऊपर गोलियों की वर्षा ही क्यों

न हो।" 'कर्मभूमि' में समाज का अछूत वर्ग अपने अधिकारों के लिए लड़ाई छेड़ देता है। पर उन्हें सफलता नहीं मिलती। अगले रोज अछूतों का आन्दोलन जोर पकड़ता है हिन्दू धर्म के कथित रक्षक, अछूतों के इस बढ़ते आन्दोलन पर आपे से बाहर हो जाते हैं। पुलिस भी उनकी रक्षा के लिए आ जाती है। समरकांत क्रोधित होकर अछूतों पर गोली चला देते हैं। प्रेमचन्द नैना के मुख से धर्म पर टिप्पणी करवाते हैं– "जिस धर्म की रक्षा गोलियों से हो, उस धर्म में सत्य का लोप समझो।" इस आन्दोलन में प्रेमचन्द नारी वर्ग को सबसे अधिक सबल रूप में सामने लाते हैं। सुखदा और नैना के द्वारा प्रगतिशील नारियों के विचारों को प्रेमचन्द ने व्यक्त किया है। प्रेमचन्द लिखते हैं– "बन्दूकों से धाँय ! धाँय ! की आवाजें निकलीं। एक गोंली सुखदा के कानों के पास से भन्न से निकल गयी। तीन–चार आदमी गिर गए पर दीवार ज्यों की त्यों खड़ी थी।"

अछूत मंदिर में प्रवेश कर ही जाते हैं। समरकान्त और ब्रह्मचारी का हृदय परिवर्तित करके यह घटना नहीं घटती। प्रेमचन्द के द्वारा "संध्या समय जब धर्म विशेषताओं की अर्थियाँ निकली। सारा शहर फट गया। जनाजे पहले मन्दिर द्वार पर गए, मंदिर के दोनों द्वार खुले हुए थे, पुजारी तथा ब्रह्मचारी का पता नही था। सुखदा ने मंदिर से तुलसीदल लेकर अर्थियों के मुख में चरणामृत डाला। इन्ही द्वारों को खुलवाने में यह भीषण संग्राम हुआ। वह द्वार खुला हुआ है, वीरों का स्वागत करने के लिए हाथ फैलाये हुए है, पर ये रूठने वाले द्वार की ओर आँख उठाकर नहीं देखते। कैसे विचित्र विजेता हैं। जिस वस्तु के लिए प्राण दिये, उसी से इतना विराग।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

'कर्मभूमि' को सामाजिक उपान्यास न कहकर राजनैतिक अथवा राष्ट्रीय उपन्यास कहा जाता है, क्योंकि इसमें समाज की समस्याओं के स्थान पर सम्पूर्ण राष्ट्र की समस्याओं को प्रधानता मिली है। इसमें हिन्दू–समाज के पद–दलित अंग अछूतों तथा स्त्रियों की पराधीन दशा की विविध समस्याओं का भी विस्तार से विवेचन हुआ है। महात्मा गांधी के रष्ट्रीय आन्दोलन के कुछ रचनात्मक कार्यक्रमों जैसे साम्प्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, खादी–प्रचार, स्त्रियों की दशा–सुधार, ग्रामोद्योग, स्वास्थ और सफाई की शिक्षा, मातृभाषा प्रेम, आर्थिक समानता, किसानों एंव मजदूरों का संगठन, विद्यार्थियों का संगठन, दलित जातियों का उद्धार आदि को भी सम्मिलित कर लिया था। अतः यह एक राष्ट्रीय उपन्यास है।

'कर्मभूमि' में प्रेमचन्द समाज की अनेक समस्याओं यथा अछूतोद्धार की बुनियादी समस्या, धार्मिक पाखण्ड की समस्या, अनुमेल विवाह, की समस्या, स्त्रियों में आदर–सम्मान तथा जातिप्रथा की समस्या, विधवाओं की समस्या, किसानों की दशा सुधारने की समस्या आदि का यथार्थ चित्रण करके ही चुप नहीं रह जाते है, वे विविध संकेतों द्वारा उन समस्याओं का यथासंभव समाधान भी प्रस्तुत करते जाते हैं।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. कहानियों में भी व्यक्ति–चेतना का चित्रण सामाजिक संदर्भों में किया। व्यक्ति की समस्याओं की अपेक्षा सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याएँ उनकी मानसिक चेतना को अधिक संवेदनशील, बनाती रही। ग्रामीणों के प्रति उनकी अधिक सहानुभूति थी। वे हिन्दी कहानी को, स्वप्नलोक से निकालकर सामाजिक यथार्थ का विषय बनाने में सफल हुए।
2. देशप्रेम, अंतर्राष्ट्रीय भावना और मानवतावादी 'जीवन–दृष्टि' से इनकी कहानियों के वस्तु–विधान तथा चरित्र–योजना का श्रृंगार हुआ है।
3. चरित्र–चित्रण की मनोविज्ञानपरक शैली का समावेश तो इनकी कहानी की विशेषता है, किन्तु कहानी को मनोविश्लेषणात्मक लक्षणग्रन्थ बनाने की प्रवृत्ति नहीं है। वह दासता तथा शोषण की विभीषिका से संघर्ष करते व्यक्ति की भावनाओं का व्यंजन तो करती है, किंतु आयातित मृत्यु–बोध के संत्रास से पीड़ित व्यक्तिमन के क्षण–बोध का नहीं और यही उनकी कहानी को स्वातंत्र्योत्तर कहानी से पृथक करती है।
4. वह सम्पूर्ण व्यक्ति की सार्थक अभिव्यक्ति का माध्यम है। इस माध्यम की कलात्मकता, कहानीकला के श्रृंगार में नहीं वरन् सार्थक शब्द–योजना प्रभावशाली, वाक्य–संगठन और अद्भुत प्रभाव में निहित है, जो लोकरस को निष्पादन करता है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

प्रेमचन्द ने अपनी अनेक कहानियों में भी स्वराज्य–आन्दोलन से सम्बन्धित विभिन्न परिस्थितियों का मार्मिक चित्रण किया है। 'जेल' कहानी की मृदुला जुलूसों के समर्थन में कहती हैं 'लोग कहते हैं जुलूस निकालने से क्या होता है? इससे यह सिद्ध होता है कि हम जीवित हैं, अटल है और मैदान से हटे नहीं हैं।' उनकी 'लालफीता' कहानी में विद्यार्थी कालेज में रहना अपने सम्मान के विरूद्ध मानते हैं और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ना चाहते हैं। प्रेमचन्द आतंकवाद को राष्ट्र की उन्नति में बाधक मानते थे। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में भी हिंसात्मक उपायों का खण्डन किया है। 'रंगभूमि' में प्रेमचन्द ने सूरदास के माध्यम से अहिंसा के आदर्शों की स्थापना कराई है। सूरदास सत्याग्रही है, गांधीवादी अहिंसा का उपाासक है और हिंसापूर्ण कृत्यों को सहन नहीं कर पाता।

राष्ट्रीय आंदोलन की लोकप्रियता से अंग्रेज शासक बहुत चिंतित थे। उन्होंने इसे अवरूद्ध करने के लिए अनेक उपाय अपनाए। इसके लिए उन्होंने धार्मिक वैमनस्य को बढ़ावा दिया। अनेक लोगों को नौकरियाँ दीं तथा अन्य अनेक प्रलोभन दिए। स्वराज्य–आन्दोलन की बढ़ती हुई लहर का दबाव अंग्रेज भी अनुभव करने लगे थे और उन्होंने कांग्रेस के नेताओं से बातचीत करके भारतीयों को शासन में प्रतिनिधित्व देना स्वीकार कर लिया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कमलेश, पद्मसिहं शर्मा प्रेमचन्द और उनकी साहित्य साधना, उत्तर चन्द कपूर एण्ड संस, दिल्ली–6, 1976.
- कीर्तिलता : भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और हिन्दी साहित्य, हिन्दुस्तान एकेडेमी, इलाहाबाद, 1967.
- कुमार, जैनेन्द्र : 'प्रेमचन्द एक कृतीव्यक्तित्व, साहित्य भण्डार इलाहाबाद, 1945.
- खोडावाल, सीताराम : प्रेमचन्द आज के सन्दर्भ में सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार।
- गर्ग, कमलादेवी : प्रेमचन्द प्रमिभा, साहित्य सौध, कलकतता 12, प्रथम संस्करण, 1950
- गर्ग, मृदुला : हिन्दी सीहित्य में स्त्री की छवि, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 3 सितम्बर 1989.
- गुप्त, उर्मिला : हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1966.
- गुप्त, धर्मेन्द्र (सं.) : समकालीन जीवन संदर्भ और प्रेमचन्द पीयूष प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980